एवरशाइन

रत्नमाला

हिंदी पाठ्य पुस्तक

भाग-4

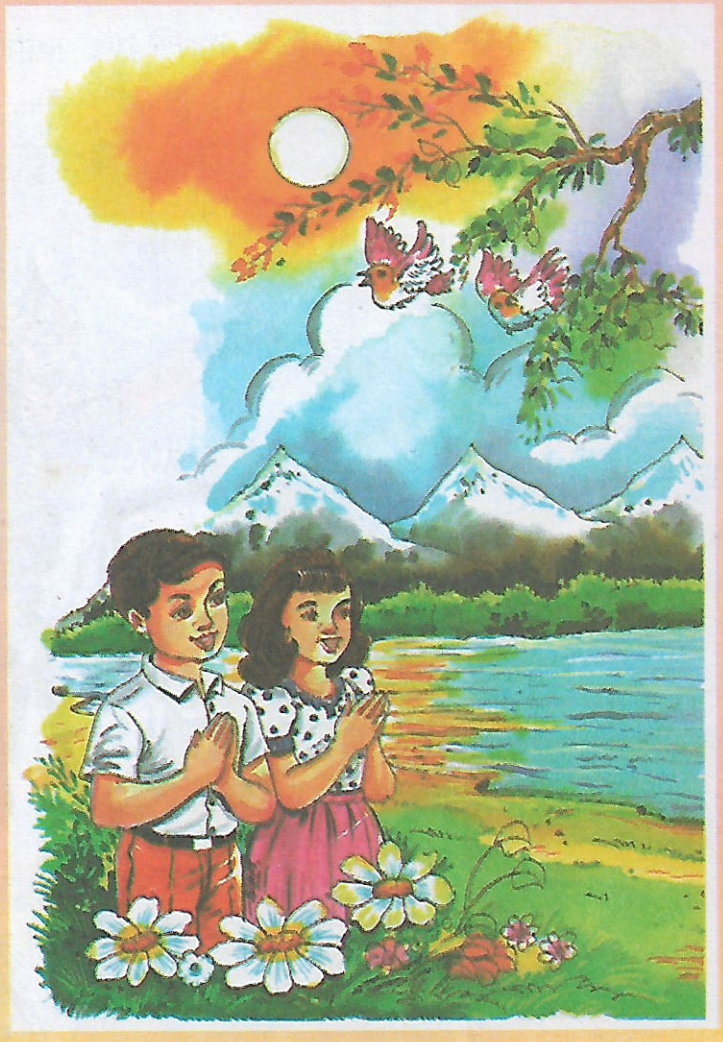

वेदप्रकाश एम.ए.(हिंदी)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

Mobile No. : 9560408043, 9868877950, Fax : 28112353

E-Mail : evershinepub@gmail.com

पुस्तक का कोई भी अंश तथा चित्र किसी भी प्रकार से उद्धृत करना सर्वथा वर्जित है ।
इस पुस्तक की कुंजी, गाइड अथवा किसी भी प्रकार की सहायक पुस्तक छापना वर्जित है ।

प्रकाशक :
एवरशाइन पब्लिशर्ज़
Soni House, WZ-348, Nangal Raya,
New Delhi-110046

चित्रांकन एवं प्रोसेसिंग :
जैन कंप्यूटर

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

PRINTERS :M/S KIRPA RAM ENGRAVER

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक-माला "एवरशाइन-रत्नमाला" के पाठों की रचना राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के आदर्श पाठ्यक्रम की सभी संस्तुतियों को ध्यान में रखकर की गई है।

प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा के शिक्षण का मुख्य उद्देश्य बच्चों को पढ़ने, लिखने और समझने का कौशल सिखाना होता है। इस पुस्तक-माला का उद्देश्य भी यही है। इसकी प्राप्ति के लिए भाषा तथा विषय-वस्तु, दोनों को योजनानुसार सरल से कठिन तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर लाया गया है। यह करते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि आरंभ की कक्षाओं में विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर कठिन शब्दावली तथा वाक्य-संरचनाओं का अधिक भार न पड़े। इसके अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री का चयन तथा लेखन विद्यार्थियों की आयु, अनुभव-सीमा एवं रुचि के अनुरूप किया गया है।

पुस्तक-माला की रचना भारत सरकार की संशोधित तथा परिवर्धित देवनागरी लिपि एवं हिंदी मानकीकरण के आधार पर की गई है। अधिकतर विषय चरित्र-निर्माण, मानव-मूल्य, सत्यता, पर्यावरण, सर्व-धर्म सभा, देश-प्रेम, स्वास्थ्य, खेल-कूद, अनुशासन तथा विज्ञान पर आधारित हैं। ये ऐसे विषय हैं जो विद्यार्थियों को देश का सफल नागरिक बनाने में सहायक होंगे।

पुस्तक-माला की सबसे बड़ी विशेषता है पाठ के अंत में विविध प्रकार के अभ्यास। इन अभ्यासों में परंपरागत प्रश्नों को अत्यंत सरल एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हमारा विश्वास है कि इन अभ्यासों को हल करने से निश्चय ही विद्यार्थियों के भाषा संबंधी ज्ञान में वृद्धि होगी।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक-माला विद्यार्थियों को स्वतः अध्ययन करने के लिए प्रेरित करेगी तथा उनके भाषा-विकास में सहायक होगी। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से प्राप्त होने वाले सुझावों का हम हार्दिक स्वागत करेंगे। ये सुझाव पुस्तक-माला के अगले संस्करण को रोचक बनाने में उपयोगी होंगे।

-प्रकाशक

विषय-सूची

1. वंदना 5-7
2. गिरिराज हिमालय 8-12
3. टेलीफोन का जन्मदाता 13-17
4. काबुलीवाला 18-23
5. भारत दर्शन 24-26
6. भीष्म पितामह 27-31
7. अंगुलिमाल 32-36
8. दो कपटी ठग 37-41
9. अन्नदाता 42-44
10. मंत्र-तंत्र 45-49

प्रश्न-पत्र—1 50

11. मित्रता की परख 51-55
12. चंद्रशेखर आज़ाद 56-60
13. साक्षरता अभियान 61-63
14. अश्वमेध का घोड़ा 64-69
15. राखी की लाज 70-74
16. शरणागत्-रक्षक शिवि 75-79
17. परीक्षा 80-84
18. गंगा का सफर 85-90
19. ... और बसंत बगीचे में आ गया 91-95
20. शकुंतला 96-100
21. चेतक 101-103

प्रश्न-पत्र—2 104

1 वंदना

पाठ परिचय

प्रस्तुत कविता में बच्चों को बताया गया है कि ईश्वर महान् है । हमें प्रतिदिन उसकी वंदना करनी चाहिए । वंदना करने से मन को शांति मिलती है तथा संसार से अज्ञान रूपी अंधकार दूर होता है ।

प्रभु तुम करुणा के सागर हो,
हम पर इतनी करुणा कर दो ।

तजें स्वार्थ, उपकार करें हम,
सब को मन से प्यार करें हम,
दुःख अपनाकर सुख देने का –
जीवन भर व्यापार करें हम,
हे प्रभु हमको ऐसा वर दो,
प्रभु तुम करुणा के सागर हो,
हम पर इतनी करुणा कर दो ।

जग में ऐसा सूर्योदय हो,
तम हरे, प्रकाश की जय हो,
सभी सुखी हों, सब स्वतंत्र हों,
सबका जीवन मंगलमय हो,
सबके रोग-दोष हरकर प्रभु,
जन-जन को तन-मन सुंदर दो,
प्रभु तुम करुणा के सागर हो,
हम पर इतनी करुणा कर दो ।

तुम हम सबके भाग्य-विधाता,
तुम हो पिता, तुम्हीं हो माता,
तुम्हीं बंधु हो, तुम्हीं सखा हो,
सब याचक, केवल तुम दाता,
कोई याचक रहे न जग में,
हे प्रभु सबकी झोली भर दो,
प्रभु तुम करुणा के सागर हो,
हम पर इतनी करुणा कर दो ।

पढ़ो और समझो

करुणा	=	दया	जन	=	लोग
तजें	=	छोड़ें	विधाता	=	बनाने वाला
स्वार्थ	=	अपना हित	बंधु	=	भाई
तम	=	अंधकार	याचक	=	माँगने वाला
दोष	=	बुराई	दाता	=	देने वाला

पाठ-बोध

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

1. बच्चे प्रभु से किस प्रकार का व्यापार करने का वर माँग रहे हैं ?
2. बच्चे प्रभु से जन-जन के लिए क्या प्रार्थना कर रहे हैं ?
3. ईश्वर को भाग्य-विधाता क्यों कहा गया है ?
4. ईश्वर को दाता क्यों कहते हैं ?

(ख) इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करो :

जग में ऐसा सूर्योदय हो,
तम हरे, प्रकाश की जय हो,
सभी सुखी हों, सब स्वतंत्र हों,
सबका जीवन मंगलमय हो,
सबके रोग-दोष हरकर प्रभु,
जन-जन को तन-मन सुंदर दो,

(ग) विलोम शब्द लिखो :

1.	स्वार्थ	×	....	2.	उपकार	×	....
3.	जीवन	×	....	4.	सूर्योदय	×	....
5.	तम	×	....	6.	स्वतंत्र	×	....

(घ) लिंग बदलो :

1.	माता	=	....	2.	सखी	=	....
3.	पुत्री	=	....	4.	देवी	=	....
5.	दादी	=	....	6.	बुआ	=	....

(ङ) समझो और लिखो :

1.	याचना	=	याचक	2.	रक्षा	=	....
3.	शिक्षा	=	....	4.	पढ़ना	=	....
5.	चाल	=	....	6.	पालना	=	....

(च) उदाहरण के अनुसार लिखो :

1. तन-मन = तन और मन
2. रोग-दोष = ...
3. माता-पिता = ...
4. दिन-रात = ...
5. सुख-दुःख = ...

(छ) दोनों खंडों को जोड़कर नए शब्द बनाओ :

उप — कार → ....

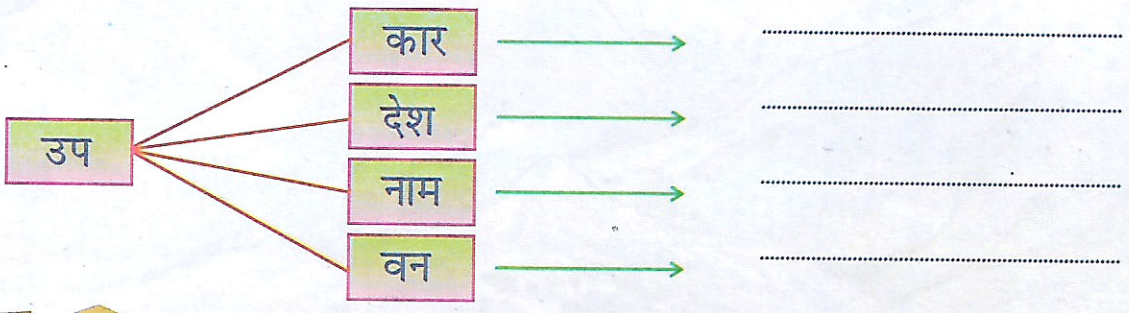

उप — देश → ....

उप — नाम → ....

उप — वन → ....

सभी धर्मों के लोग ईश-वंदना करते हैं। किंतु उनके वंदना करने के तरीके अलग-अलग होते हैं। ज्ञात करो कि विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग किस प्रकार ईश-वंदना करते हैं।